शिवशक्ति सरस्वती माँ

23. मम्मा में हम ने यह देखा है कि सामने कोई भी आये, किसी भाव से भी आये, मम्मा की दृष्टि पड़ते ही वह चरणों में झुक जाता था। हम तपस्या में, 14 वर्ष मम्मा के अंग-संग रहे। रोज़ अमृतवेले दो बजे बिस्तर छोड़ती थीं और कुर्सी पर बैठ योग करती थीं। यह मम्मा की नियमित दिचर्या थी। मम्मा हमें सब प्रकार की कर्मणा सेवा साथ में बैठकर सिखाती थीं। चाहे अनाज़ साफ़ करते थे, चाहे सब्जी काटते थे, मम्मा सबसे पहले आकर बैठती थीं और कैसे साफ़ करें और काटें वो भी सिखाती थीं।

24. मम्मा बहुत निर्भय थीं। मम्मा प्रैक्टिकल (प्रत्यक्ष) में शेरनी, शक्ति स्वरूपा थीं। साथ-साथ मम्मा क्या अनासक्त थीं, बात मत पूछो ! कोई देह-अभिमान नहीं परन्तु स्वमान का नशा इतना था कि और किसी में न हो सके। अपने पर पूरा विश्वास, बाबा पर पूरा विश्वास और बाबा के कार्य में पूरा विश्वास। बाबा ने कहा और मम्मा ने करना शुरू किया। एक बाबा ही संकल्प, श्वास सब में था। प्यार भी सबके साथ मम्मा का इतना था, इतना था कि बराबर मेरे दिल से ये शब्द निकलते हैं ''मम्मा तू ममता की मूर्ति है, निर्मानता की निधि है।'' उनमें ममता थी परन्तु कोई मोह नहीं। सबको इतना प्यार करते हुए भी मम्मा उतना ही निर्मोही थीं, ममतामयी भी और ममता से परे भी।

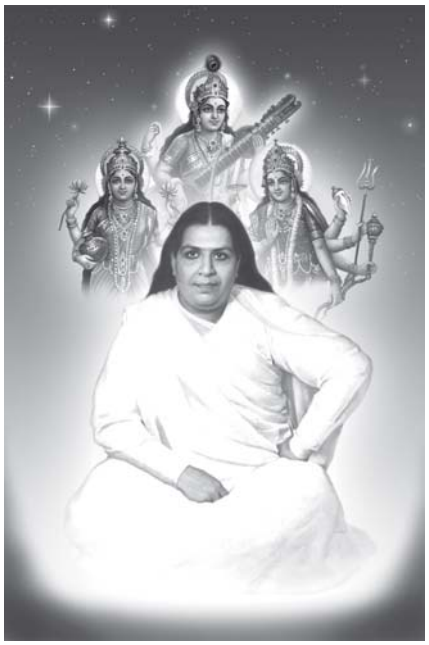

25. यह कराची की बात है, मम्मा ऑफिस में बैठी थीं तो मैंने जाकर पूछा, ''मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें ?'' तब मम्मा ने कहा, ''सदैव समझो यह मेरी अन्तिम घड़ी है।'' वो दिन और आज का दिन मम्मा का वो मंत्र मुझे भूला नहीं है कि हर घड़ी अन्तिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है।